महान फलदायक रहस्यमयी
इन्द्रजाल

षोडसीदेवी
११

छिन्न मस्ता

बाजीगर

कालीदेवी

तन्त्र मन्त्र और टोटके

सुन्दर सुखी जीवन के लिए

कार्य में सफलता

ऐसा कौन मनुष्य है, जो अपने कार्य में कुशलता या सफलता नहीं चाहता वास्तविकता ही यह है, कि संसार का प्रत्येक मानव प्राणी केवल सफलता प्राप्त करने के लिये रात दिन निरन्तर भाग दौड़ कर रहा है। अपने कार्य में कुशलता या सफलता पाने के लिए आदमी क्या नहीं करता है और कैसे-कैसे पापड़ नहीं बेलता है। एक भी मनुष्य ऐसा नहीं मिलेगा जो लगातार इसके लिए भटक न रहा हो।

व्यापारी व्यापार में, नौकरी करने वाला तरक्की में, प्रेमी प्यार में, विद्यार्थी परीक्षा में, साहसी अपने अभियान में...... सबके सब रात दिन अपने उद्देश्यों में सफलता, कार्यों में कुशलता पाने के लिए लगे हैं। जो लोग परिश्रम करते हैं। खून पसीना बहाते हैं।

हर पल प्रयत्नशील रहते हैं। इतना सब करने के पश्चात भी सफलता हाथ नहीं लगती और असफल होने पर आदमी के मन को एक गहरा धक्का लगता है। कई लोग तो इस असफलता के कारण अपने जीवन से इतने निराश हो जाया करते हैं, कि वह आत्महत्या भी कर लेते हैं।

नौकरी में, प्रेम में, व्यापार में, परीक्षा में, तक-नीकी कार्यों में कुशलता एवं सफलता ना पाने के कारण अनेकों व्यक्ति अर्ध-विक्षित हो जाते हैं या फिर आत्महत्या कर लेते हैं।

कार्य में सफलता, उद्यम में कुशलता प्रत्येक व्यक्ति का मन प्रसन्न रखती है। वह अपने को बड़ा सुखी मानता है। वह शान और आराम से रहता है।

कार्य सफलता किसी कार्य को बनाने के लिए क्रियाओं का संग्रह है, जिनका एकीकरण सफलता या असफलता, कुशलता या अकुशलता का प्रतीक होता है।

इस प्रकार यह भावनात्मक स्तर पर की गई क्रियाएँ हैं।

उदाहरण के लिए मान लें कि आप किसी कार्य विशेष में सफलता चाहते हैं। ऐसी दशा में सर्वप्रथम

आप उसके 'गुर' सीखेंगे और उस कार्य प्रणाली को अपनाएँगे ज़िस पर चलकर दूसरे सफलता या दक्षता प्राप्त कर चुके हैं। इस दिशा में किए गए सारे प्रयत्न आपकी भावनाओं या लाभ के कारण होंगे। अपना दिमाग लगाएँगे, आप ही सोचेंगें, इस प्रकार या उस प्रकार करना चाहिए कि सफलता मिल सके।

सूझ-बूझ ही किसी भी कार्य में सफलता की निश्चित गारण्टी है। इस सत्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है।

सूझ-बूझ का सीधा सम्बन्ध बुद्धि से है। मस्तिष्क से है। अगर आपकी बुद्धि आपका दिमाग सूझ-बूझ वाला है, तो हर कार्य में अवश्य सफलता है, जो आपने अपने हाथ में ले रखा है। अन्यथा......।

कार्य सफलता या कार्य कुशलता की निश्चित गारण्टी देने वाली सूझ-बूझ की उत्पत्ति बुद्धि से है। छोटे-छोटे टोटके आपकी बुद्धि और सूझ-बूझ पर सीधा असर करते हैं।

यह टोटके वास्तव में आपकी बुद्धि प्रखर करने के लिए, आपकी सूझ-बूझ को उपयोगी और प्रभावशाली तथा सफल बनाने के लिए मानसिक खुराक का काम करते हैं। इससे आप अपने कार्यों में अवश्य

सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यह एक मानी हुई बात है। इसी तथ्य और सत्य के आधार पर यह प्रामाणिक परखी हुई सामग्री प्रस्तुत हैं।

नए व्यापार में सफलता के लिए

कई बार ऐसा होता है, कि व्यापारी पुराने उद्योग से अत्यन्त सफलता पाकर नया उद्योग करने के लिए उत्साहित होता है। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं जब पुराना उद्योग तो यथावत चलता रहता है, पर नया उद्योग जी का जंजाल सिद्ध हो जाता है। नया उद्योग प्रारम्भ करने वालों के कल्याण हेतु एक टोटका लिख रहे हैं।

[शनिवार के दिन पुराने कार्यालय से कोई भी लोहे की वस्तु नए प्रतिष्ठान में लाकर रख दें। रखने से पूर्व उस स्थान पर थोड़े से काले उड़द डाल दें। यह ध्यान रहे कि वह वस्तु बार-बार हटाई न जाए। इस प्रकार के करने से पुराने उद्योग के साथ-साथ नया उद्योग भी चल निकलता है]

व्यापार में सफल साझेदारी के लिए

व्यापार में साझेदारी का चलन बहुत प्राचीन है। यह साझेदारी दो व्यक्तियों में हो सकती है या फिर

अनेक व्यक्तियों में साझेदारी बचाये रखने के लिये या फिर ऐसी किसी भी जटिल स्थिति को टालने के लिए निम्न टोटका अपनाएँ।

[किसी भी दीपावली की रात कच्चा सूत ले आएँ। उसे लक्ष्मी के आगे बैठकर श्रद्धापूर्वक बटें। रोली के छींटे भी लगायें। इसके पश्चात व्यापार स्थल पर कहीं ऊपर टांग दें। प्रयत्न करे कि हर दीपावली पर यह क्रिया दोहराई जाती रहे। ऐसा करने से साझेदारी बनी रहेगी।]

कर्मचारी नियमित करने हेतू

एक सज्जन ने बिजली के तार बनाने का छोटा-सा कारखाना लगाया, कारखाना तो ठीक चल रहा था, पर कर्मचारी सदैव भागते रहते थे इस कारण कारखाने को नया कर्मचारी खोजने तक काफी नुकसान उठाना पड़ता था। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए एक संत ने एक सरल टोटका बताया जिससे उन्हें काफी लाभ हुआ। वह नीचे लिख रहा हूँ।

[किसी शनिवार को कारखाने की ओर आते हुए मार्ग में पड़ी कोई भी कील उठा लें। कारखाने में लाकर उस कील को प्रथम भैंस के मूत्र में तत्पश्चात

गंगाजल में धोकर उस स्थान या कमरे में ठोक दें जहाँ कर्मचारी काम करते हों। उस कील के प्रभाव से कर्मचारी अचानक भागने बन्द हो जाएंगे]

• व्यक्तिगत आलस्य दूर करने हेतु

लखनऊ में एक सज्जन हैं उनका अच्छा खासा चलता व्यापार है, अनेक व्यक्ति काम करते हैं, पर लाख प्रयत्नों के बाद भी वह व्यापार से अधिक लाभ कमाने की स्थिति में नहीं आ पा रहे हैं। काफी प्रयत्नों के पश्चात यह पता लगा कि व्यापार न चमकने का मुख्य कारण था उन सज्जन की कार्य कुशलता, जिसे आलस्य का घुन धीरे-धीरे चाट रहा है। एक संत ने एक सरल सा टोटका बताया आज वह ठीक हैं। वह टोटका नीचे लिख रहा हूँ।

[मंगलवार के दिन लाल मूँगा ले आएँ। उसी दिन उसे सुनार से जड़वा लें। इसके पश्चात 'राम दूताय हनुमान नमः' का जाप कर पहन लें। ईश्वर की कृपा से एक माह के अन्दर आलस्य दूर भाग जाएगा और कार्य कुशलता बढ़ जाएगी]

• कार्य में आशातीत सफलता मिले

जीवन में प्रायः मनुष्य को ऐसी जटिल स्थिति

का सामना करना पड़ता है, जब अनेक प्रयत्नों के बाद भी कार्य सफल होता नजर नहीं आता। इसके लिए एक टोटका लिख रहा हूँ। सर्वप्रथम निम्न वस्तुएँ एकत्रित कर लें—

१. ७ हल्दी की साबुत गांठ
२. ७ जनेऊ (जो यज्ञोपवीत के अवसर पर धारण किए जाते हैं)
३. ७ छोटी सुपारियाँ (पूजा के काम आने वाली)
४. ७ पीले फूल (किसी भी प्रकार के हों)
५. ७ छोटी-छोटी गुड़ की डलियां
६. ७ १५ के यन्त्र
७. ७ छोटे बच्चे (जिनकी आयु १२ वर्ष से कम हो)

बृहस्पतिवार के दिन यह सब वस्तुएँ एकत्रित कर लें और इनको किसी पीले वस्त्र में एक स्थान पर बांध लें। अब बच्चों को थोड़ी-थोड़ी पीली बरफी और कुछ पैसे देकर विदा करें और वह पोटली घर में किसी भी निजी स्थान पर रख दें।

इस टोटके के प्रभाव से आपके रुके और असफल कार्य स्वयं ही सम्पन्न होने लगेंगे। यह एक शुद्ध

दव ।ऋय है इसके करने से किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है।

इसके पश्चात इन वस्तुओं को पीसकर एक सोने या तांबे के तांबीज में भर लें। धीरे-धीरे काम की इच्छा स्वयं ही जाग्रत हो जाएगी।

• कार्य की असफलता पर

अगर आपके अधिकतर कार्य असफल होते हैं या कार्य अनेक विघ्न-बाधाओं के बाद ही सम्पन्न होते हैं, तो आप इस तंत्र को करें, आपके अधिकतर कार्य बन जायेंगे। कम परिश्रम से अधिक लाभ अर्जन करेंगे।

प्रातःकाल में सूर्य जब तक चढ़ रहा हो आप इस टोटके को कर सकते हैं, सूर्य जब ढलने लगे तो यह टोटका प्रभावशाली नहीं रहता है। सर्वप्रथम आप सूर्य को नमन करें इसके बाद कच्चा सूत लेकर उस पर निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए सात गांठे लगायें। अब आप इस सूत को कमीज की सामने वाली जेब में रखकर चले जायें। बिगड़ा कार्य सिद्ध होगा और उस दिन काम बनते चले जायेंगे।

मन्त्र इस प्रकार है—उँ गंगं गणपतये नमः।

• कार्य में रुकावटें समाप्त करें

अगर कोई व्यक्ति आपके काम में विघ्न डाल रहा है तो आप निम्न टोटका अपनायें। सारी बाधायें दूर हो जायेंगी।

प्रातः उठते ही तीन बार उस व्यक्ति का नाम लेकर अपशब्द कहें इसके बाद भोजपत्र पर उस व्यक्ति का नाम काली स्याही से लिखें। फिर उसे ले जाकर पीपल के पेड़ की जड़ में गहरा दबा दें। आपके सारे विघ्न, बाधायें समाप्त हो जायेंगी। वह व्यक्ति आपके अनुकूल हो जायेगा।

• कार्य कुशलता का ह्रास होना

अगर आप काफी समय से यह अनुभव कर रहे हैं कि आपके लाख प्रयत्न करने के बाद भी आपकी कार्यकुशलता दिन व दिन घटती जा रही है और आपका यह सन्देह विश्वास में बदल गया है कि— किसी ने कुछ करा रखा है या कुछ स्वयं हो गया है तो निम्न क्रिया करें। शीघ्र लाभ होगा।

प्रत्येक मंगलवार को हनुमान मन्दिर जायें और हनुमानजी के हाथों से थोड़ा सा सिंदूर ले आएँ। सर्व-प्रथम माथे पर फिर बाहों पर और अन्त में छाती पर

लगाएं। साथ ही निम्न मन्त्र का जाप करें तो चमत्कारी लाभ प्राप्त होगा।

ओम श्री हनुमते नमः
ओम नमो हारी संकट मर्कटाय स्वाहा
ओम श्री श्री पवननन्दाय स्वाहा
ओम नमो हनुमन्ते आवेशय स्वाहा
ओम नमो भगवते आंजनेमाय स्वाहा
महाबलाय स्वाहा
हूँ पवननन्दाय स्वाहा
श्री हनुमान की जय।
ओम हूँ हनुमते रुद्रात्मकाय हुम फट्
हनुमते रक्ष सर्वदा
ओम हनुमते नमः
ओम अंजनी सुताय विग्रहे वायुपुत्राय धीमही तन्नो मारुति प्रचोदयात्।

• काम ना मिलने पर

अगर आप कार्य की कमी से दुःखी और परेशान रहते हैं और आप काफी हीन भावना का अनुभव करने लगे हैं तो यह सरल सा टोटका अपनायें। इसके प्रभाव से काम मिलने लगेगा?

एक बेदाग बड़ा-सा नींबू ले लो उसके चार बराबर-बराबर टुकड़े कर लो। दिन ढले चौराहे पर जाकर चारों दिशाओं में फेंक दो। काम का अभाव समाप्त हो जायेगा।

• बीमारी में

अगर आप यह अनुभव करते हैं कि बीमारी के कारण आप चाहकर भी काम नहीं कर पाते हैं तब आप पुष्य नक्षत्र में सहदेवी की जड़ लाकर अपने पास रखें। इस समस्या से छुटकारा मिल जायेगा।

• आलस्य के लिए

कटेरी की जड़ शहद में पीसकर केवल सूंघने मात्र से आलस्य दूर हो जाता है। यह मेरा समय-समय पर आजमाया टोटका है।

मन्दबुद्धि बच्चों के लिए

शरीर से बलिष्ठ और हृष्ट-पुष्ट होने पर भी कई बच्चे मन्दबुद्धि होते हैं। वह बात को देर से या फिर कम समझते हैं। इस कारण कार्यकुशलता पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चों के कल्याण हेतु एक अनुभूत टोटका दे रहा हूँ। लाभ उठावें।

किसी भी दिन रात के लगभग १२ बजे थोड़े से बाल चुटिया के स्थान (शिखा) पर से काट लें और उन्हें अपने पास रख लें। अगले दिन भी यही क्रिया करें। इस टोटके को करते हुए जब ४ दिन हो जाएँ तो रविवार के दिन इन बालों को जलाकर बाहर फेंक दें। सम्भव हो तो पैर से भली-भाँति रगड़ दें। बच्चा शनैः शनैः कुशाग्र बुद्धि का होने लगेगा। अगर सम्भव हो तो इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्ये नमः।

परीक्षा में पास होने के लिए

कठिन से कठिन परिश्रम करने पर भी कई बार बच्चे फेल हो जाते हैं, जिसका सारा दोष भाग्य पर मढ़ दिया जाता है। वास्तव में मेहनत तो यह बहुत करते हैं पर मस्तिष्क उस मेहनत को एकत्रित नहीं कर पाता इसके लिए एक सरल अनुभूत टोटका दे रहा हूँ।

जब तक परीक्षायें हों बच्चे को दही नियमित दिया करें, केवल उसके समय में परिवर्तन करना होता है इसमें रहस्य है। जैसे प्रथम दिन प्रातः ८ बजे दिया अगले दिल ९ बजे और फिर १० बजे इस

प्रकार एक घण्टा रोज बढ़ाते जायें। परीक्षा भवन में जाते समय अगर सम्भव हो तो यह यंत्र उनकी जेब में रख दें। यन्त्र निम्न प्रकार है—

नाम	७३	८१	२	८
	७	३	७८	७१
	८०	७४	९	१
	४	६	७५	७९

कार्य से भागने पर

प्रायः देखा गया है, कि व्यक्ति या बच्चा पूर्णतः कार्यकुशल होने पर भी काम से दिल चुराता है। उसकी उपस्थिति की मात्रा में अनुपस्थिति कहीं अधिक होती है। ऐसी हालत में बड़ी कुण्ठा उत्पन्न होती है। मन्द बुद्धि हो, अक्षम हो या कार्य उपलब्ध ना हो तो बात समझ में आती है, पर कार्यकुशल होने पर पूर्णतः सक्षम होने पर और कार्य उपलब्ध होने पर भी अनुपस्थित होना या कार्य ना करना यह बात काफी भयानक नजर आती है। ऐसी जटिल परिस्थिति

प्रकार एक घण्टा रोज बढ़ाते जायें। परीक्षा भवन में जाते समय अगर सम्भव हो तो यह यंत्र उनकी जेब में रख दें। यन्त्र निम्न प्रकार है—

	७३	८१	२	८
नाम	७	३	७८	७
	८०	७४	६	१
	४	६	७५	७९

कार्य से भागने पर

प्रायः देखा गया है, कि व्यक्ति या बच्चा पूर्णतः कार्यकुशल होने पर भी काम से दिल चुराता है। उसकी उपस्थिति की मात्रा में अनुपस्थिति कहीं अधिक होती है। ऐसी हालत में बड़ी कुण्ठा उत्पन्न होती है। मन्द बुद्धि हो, अक्षम हो या कार्य उपलब्ध ना हो तो बात समझ में आती है, पर कार्यकुशल होने पर पूर्णतः सक्षम होने पर और कार्य उपलब्ध होने पर भी अनुपस्थित होना या कार्य ना करना यह बात काफी भयानक नजर आती है। ऐसी जटिल परिस्थिति में आप यह टोटका अपनायें। अवश्य ही लाभ होगा।

रविवार के दिन एक शराब की बोतल ले लें। सर्वप्रथम उसे भैरों पर अर्पण करें। उसके बाद उस बोतल को सात बार उस पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से उतार कर किसी को दान दे दें या फिर दिन ढले किसी चौराहे पर, मरघट में या पीपल के पेड़ के नीचे रख दें ? परिस्थिति में तुरन्त सुधार अनुभव करेंगे।

• लक्ष्मी प्राप्ति करने हेतु

प्रायः हर व्यक्ति किसी ना किसी समस्या को लेकर दुःखी है। कुछ घर में ऐश्वर्य सम्पन्नता चाहते

४१	१८	११
१०	२० नाम	३०
१६	२३	३२

हैं तो कुछ व्यापार में उन्नति चाहते हैं तो कुछ नौकरी की समस्या को लेकर परेशान है। ऊपर लिखित यन्त्र को पूरी तरह अभिमन्त्रित कर शीशे के फ्रेम में या किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर जड़वालें तो यह यन्त्र

आपके भाग्य को पलट देगा और आप जीवन की मूल-भूत आवश्यकताओं के लिए दुःखी नहीं होंगे। घर में सुख शान्ति का वास और व्यापार स्थल में बरकत रहेगी इस यन्त्र के प्रभाव से चंचला लक्ष्मी स्थायीत्व ग्रहण करेगी। यन्त्र ऊपर दिया गया है।

• ऋण से छुटकारा पाने के लिए

ऋण उस दलदल की तरह है जिसमें से जितना निकलने की चेष्टा करो फंसते ही जाते हो। जीवन में कभी न कभी कहीं न कहीं हर व्यक्ति को ऋण लेना पड़ता है, अगर यह ऋण लेकर चुक जाए तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है अन्यथा कर्ज में कई पुश्तें गुजर जाती हैं और ऋण ज्यों का त्यों खड़ा रहता है। पाठकों की सुविधा के लिए ऋण से छुट-कारा पाने के लिए यह टोटका लिख रहा हूँ।

सर्वप्रथम पाँच गुलाब के पूर्ण खिले हुए फूल ले लो। इसके पश्चात १।। मीटर सफेद कपड़ा लेकर अपने सामने बिछा लो। इन पांचों गुलाब के फूलों को उसमें गायत्री मंत्र पढ़ते हुए बांध दो। अब आप स्वयं जाकर इन्हें गंगा या यमुना में प्रवाहित कर दो। भगवान ने चाहा तो घर में सुख-समृद्धि और खुश-हाली रहेगी। गायत्री मंत्र यह है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात् ।]

• धन वृद्धि हेतु

[यह तांत्रिक टोटका केवल नवरात्र में ही किया जाता है। एक नवरात्र से लेकर दूसरे नवरात्र तक ही प्रभावकारी रहता है।

इस सरल टोटके में घर का मुखिया अष्टमी के दिन ५८ पैसे लेकर किसी लाल कपड़े में (वह माता का कन्द भी हो सकता है) बांध कर पूजा के स्थान, व्यापारी वर्ग द्रव्य रखने के स्थान पर रख सकते हैं।

इस प्रकार यह धनका टोटका आगामी नवरात्र तक प्रभावी रहेगा। माता की अनुकम्पा से आपके घर में धन सम्पत्ति की कोई कमी नहीं रहेगी।]

• बिक्री वृद्धि हेतु

[हमारा व्यापारी वर्ग आमतौर पर बिक्री घटने या फिर बिक्री बांध देने से अधिक चिन्तित रहता है। प्रतिस्पर्धा के युग में ऐसे व्यक्तियों की तादाद कम नहीं होती जो इस प्रकार की कठिनाई से पीड़ित होते हैं। अगर ऐसा कोई व्यापारी ऐसी कठिनाई झेल रहा है तो वह इस टोटके को अपनाए। लाभ होगा।

रविवार के दिन गंगाजल ले लें। उसे ११ बार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करलें, तत्पश्चात् उस जल को कार्यालय या दुकान की चारों दीवार पर भली-भाँति छिड़क दें। इसके बाद थोड़े साबुत काले उड़द ले लें। उन काले उड़दों पर २१ बार निम्न मंत्र का जाप करें और कार्यालय या दुकान में बिक्री बढ़ जायेगी और लाभ निरन्तर बढ़ता जाएगा। इस तांत्रिक क्रिया को कई बार दोहराना है। मंत्र निम्न प्रकार है—

भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा।
उठे जो डंडो बिके जो माल, भंवर वीर सों नहीं जाए॥

• सर्व कार्य सिद्धि हेतु मंत्र

यह एक अत्यन्त प्रभावशाली एवं हर कार्य में लाभकारी मंत्र है। इस मंत्र को जपने के लिए रात्रि बारह बजे के बाद का समय श्रेष्ठ है। इस मंत्र को इकतालीस दिन तक नियम से तीन माला प्रतिदिन जपना होता है। इस मंत्र को जपने से हर कार्य चाहे वह कितना भी जटिल क्यों न हो सम्पन्न होता है। इस मंत्र में नियम और श्रद्धा की आवश्यकता सबसे अधिक होती है। जहां पर 'अमुक' शब्द आया है वहां

कार्य विशेष का उच्चारण करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो महाशाबरी शक्ति मम अरिष्ट निवाराय निवाराय मम 'अमुक' कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा॥

• नजर व टोक के लिए नाल

अगर आप किसी दुकान, मकान के मुख्य द्वार चौखट पर ध्यान से देखें तो एक लोहे की नाल (जो घोड़ों के खुर में ठोकी जाती है) लगी स्पष्ट नजर आ जाएगी। इस नाल का प्रयोग व्यापार या मकान को बुरी नजर टोक और टोने टोटके से बचाने के लिए किया जाता है।

इस कार्य के लिए प्रातः अज्ञानवश कोई भी लोहे की नाल किसी भी दिन ठोक दी जाती है, जबकि इसका विधान है कि नाल केवल घोड़े की हो तो अधिक उत्तम रहता है। इसके पश्चात् नाल को गंगा जल से धो लें। अगर संस्थान या मकान का मुख पूर्व की ओर हो तो रविवार, पश्चिम की ओर हो तो शुक्रवार को ठोकें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि नाल का खुला मुंह नीचे की ओर हो।

धन लाभ के लिए

[या मुसब्बिब वल असबाब]

इस मंत्र को ५०१ बार किसी भी सादे कागज पर लिखकर सिद्ध कर लें। फिर इस यंत्र को एक कागज पर लिखकर घर में रखें। खुशहाली आती जाएगी।

बिक्री वृद्धि हेतु टोटका

जिन व्यापारी भाईयों की बिक्री लाख प्रयत्नों के बाद भीनिरन्तर घटती जा रही हो या जिन गृह-स्वामियों के लाख जतन करने पर भी घर में खुशहाली या शांति स्थापित न हो रही हो वह यह अचूक टोटका अपनाएं। अवश्य ही लाभ होगा।

शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार (गुरुवार) से यह क्रिया आरम्भ करें और हर बृहस्पतिवार को बिना विघ्न दोहराते जाएं। टोटका निम्न प्रकार है—

घर या व्यापार स्थल के मुख्य द्वार के एक कोने को गंगा जल से धो लें। इसके पश्चात् हल्दी से स्वास्तिक (सतिया) बनायें उस पर चने की दाल और थोड़ा गुड़ रख दें। इसके बाद स्वास्तिक को बार-बार ना देखें। प्रभु कृपा से आप शीघ्र ही लाभ का अनुभव करेंगे। यह एक शुद्ध क्रिया है।

• नवनिर्मित मकान में खुशहाली, धन लाभ के लिए

[मेरे स्वयं के सामने ऐसे एक नहीं अनेक व्यक्ति आए हैं, जो नया मकान बनवाकर या फिर नई दुकान करके परेशानी में आ गए। धन और परिश्रम दोनों ही नष्ट हो गए। जब भी नया मकान बनवाएं, उसकी नींव में निम्न वस्तुएं रखवा दें। मेरा अनुभव है कि यह वस्तुएं धन लाभ के साथ-साथ टोने-टोटकों से भी बचाव रखती है। इस टोटके के लिए निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

१, तांबे की लुटिया ढक्कन सहित।

२. चाँदी का सर्प-सर्पिणी का जोड़ा।

३. चाँदी का एक छोटा-सा पतरा।

४. पूजा वाली पांच छोटी सुपारियाँ।

५. हल्दी की सात साबुत और साफ गांठ।

इन सब वस्तुओं को तांबे की लुटिया में पानी भर कर डाल दें। इसके बाद ढक्कन अच्छी प्रकार बन्द कर दें। अब यह लुटिया मुख्य द्वार के पश्चिम की ओर दबा दें। अगर सम्भव हो तो किसी योग्य

तांत्रिक या विद्वान पण्डित का परामर्श भी ले लें, ताकि कोई त्रुटि न रह जाए।

• अचानक धन प्राप्ति के लिए

निम्न मंत्र को ५१००० की संख्या में जपकर शक्तिवान कर लें, इसके बाद इस मंत्र को विधि अनुसार प्रयोग में लायें। अचानक धन प्राप्त होगा। मंत्र इस प्रकार है—

बैठे चबूतरे पढ़े कुरान,
हजात काम दुनिया का करे,
एक काम मेरा कर न करे तो,
तीन लाख तैतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

• धन लाभ के लिए

यह एक बेहद सरल और सस्ता टोटका है। इसमें केवल नियम की आवश्यकता होती है। थोड़ा-सा नियम के साथ पालन करने पर कोई भी व्यक्ति धन लाभ कर सकता है।

शनिवार के दिन सायंकाल जब दोनों समय मिल रहे हों तो उड़द के दो साबुत बड़े लेकर उन पर तनिक-सी सादी दही और सिंदूर छिड़क दें। इसके बाद यह बड़े किसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें।

यह ध्यान रहे पलट कर नहीं देखना है। इस टोटके को २१ दिन नियम पूर्वक करें।

• विशिष्ट लाभ हेतु

यह मंत्र भी दीपाबली के दिन सिद्ध किया जाता है। दीपावली की रात लगभग बारह और एक के मध्य थोड़ा-सा गंगाजल लेकर और सवा सौ ग्राम बेसन की बनी पीली बर्फी लेकर आसन पर बैठ जाएं, तत्पश्चात इस मंत्र की तीन माला जपें। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवसाय, धन धान्यधिपतये धन धान्य स्मृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

इसके पश्चात पीली बरफी बच्चों को बांट दें और अभिमन्त्रित जल कार्यालय या व्यापार स्थल की चारों दीवारों पर छिड़क दें। इस क्रिया के पश्चात सम्भव हो तो एक माला प्रतिदिन नियम से जपें। मां लक्ष्मी ने चाहा तो धन-धान्य की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग के लिए यह साधना अति उपयोगी है।

भिन्न-भिन्न प्रकार के विघ्न निवारण हेतु

हर प्रकार के विघ्न, बाधा के निवारण हेतु दुर्गा

सप्तसती में वर्णित निम्न मंत्र अत्यन्त उपयोगी है।
मंत्र निम्न प्रकार है—

सर्वबाधा प्रशमन जैलो कसय अखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यम मस्मद बैरी (अमुक) विनाशनम्।

इस मंत्र के नियमित जाप से व्यापार मार्ग में आई बाधाओं का शमन और निराकरण होता है और उसके समक्ष काले तिलों से हवन करें। जाप में निरन्तर यही मंत्र दोहराते जावें।

ह्रीं

नाम
पता

• ग्राहकों की संख्या बढ़ाने के लिए

व्यापारी बन्धुओं को चाहिए कि सोमवार को प्रातः सफेद चन्दन ले आएं। उसे लाने के पश्चात् नीले डोरे में पिरो लें। उस पर निम्न मंत्र को २१ बार पढ़ें और तिजोरी में रख लें या पूजा के स्थान पर रख दें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ दुर्गं स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तो,
स्वस्थेः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।

• लक्ष्मी के लिए

शायद इस पुस्तक के पाठकों को यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य होगा, जिस प्रकार बिल्ली की जेर लक्ष्मी लाभ हेतु काम आती है ठीक उसी प्रकार घोड़े की जीभ भी काम आती है। नीचे मैं लक्ष्मी प्राप्ति का एक अत्यन्त अचूक टोटका लिख रहा हूँ।

घोड़ी जब प्रसव कर रही हो तो बच्चे के साथ एक झिल्ली भी बाहर आती है। घोड़ी प्रयत्न कर उसे तुरन्त खा जाती है। उस झिल्ली की रचना सफेद होती है। अगर इसको सम्भालकर रखा जाए तो असीम धन प्राप्त होता है।

• व्यापार में वृद्धि के लिए

मंगलवार के दिन ७ साबुत डंठल सहित हरी मिर्च और एक नींबू लाएं। इसके पश्चात् उन्हें एक डोर में पिरो लें। इन सबको कार्यालय या व्यापार स्थल के बाहर टांग दें। ऐसा हर मंगलवार को करें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता है और नजर या टोक भी नहीं लगती।

• अचल सम्पत्ति के लिए टोटका

[जिन व्यक्तियों का लाख प्रयत्न करने पर भी स्वयं का मकान न बन पा रहा हो वह व्यक्ति इस अनुभूत टोटके को अपनाएं।

प्रत्येक शुक्रवार को नियम से किसी भूखे को भोजन कराएं। और रविवार के दिन गाय को गुड़ खिलाएं। ऐसा नियमित करने से अपनी अचल सम्पत्ति बनेगी या फिर कोई पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी।

यदि सम्भव हो तो प्रातःकाल स्नान ध्यान के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का जाप करें। उद्देश्य शीघ्र ही प्राप्त होगा। मंत्र निम्न प्रकार है—

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तो,
स्वस्थे स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।

प्रयोग इस प्रकार है—

प्रातःकाल सर्व कार्यों से निवृत होकर दुर्गा सप्त-शती के चतुर्थ अध्याय का पाठ १०८ दिन तक नियम से करें। कार्य में सिद्धि प्राप्त होगी।]

• बचत करने के लिए

प्रायः ऐसे लोग होते हैं, जो अधिक-से-अधिक कमाने के पश्चात् भी कुछ बचा नहीं पाते। यह पूछने

पर कि क्या व्यय हुआ ? कैसे व्यय हुआ ? यह बता पाने में स्वयं को नितान्त असमर्थ अनुभव करते हैं। कमाई में बचत हेतु एक टोटका लिख रहा हूँ। इस सरल टोटके को करें और लाभ उठावें।

मंगलवार के दिन लाल चन्दन, लाल गुलाव के फूल और रोली ले आएं। इन सब वस्तुओं को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी या द्रव्य रखने के स्थान पर रख दें। धन लाभ प्रारम्भ हो जाएगा। इस टोटके को छः माह के बाद दुबारा करें।

• सम्पत्ति में बरकत हेतु

अगर आप यह अनुभव करें कि आपके द्वारा बनाई गई सम्पत्ति में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही है, इसके विपरीत वह घट रही है, या नष्ट हो रही है तो निम्नलिखित प्रयोग करें।

किसी भी बृहस्पतिवार को बाजार से जल कुम्भी ले आओ उसे पीले कपड़े में लपेट कर लटका दो। इस क्रिया में जल कुम्भी को एक बार लटका देने के पश्चात् उसे दुबारा छूना निषेध है।

• पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने हेतु

कई बार देखा गया है, कि पैतृक सम्पत्ति होने के बाद भी वह सम्पत्ति किसी न किसी कारण प्राप्त नहीं

होती। वह अदृश्य कारण अनेक हो सकते हैं, पर यहाँ हम केवल एक तंत्रोक्त उपाय दे रहे हैं जो लगभग सभी कारणों से खरा उतरता है।

व्यक्ति विशेष को चाहिए कि सोमवार के दिन श्वेत चितकवरी कौड़ी को भली-भांति पीस ले। इस पीसी गई चितकबरी कौड़ी का पाउडर जिस व्यक्ति से सम्पत्ति प्राप्त होनी है उसके मुख्य द्वार पर छिड़क दें। यह टोटका कई बार दोहरायें। कार्य में सफलता प्राप्त होगी।

• लाटरी द्वारा धन प्राप्ति हेतु

यूँ तो भारतवर्ष में प्रतिदिन करोड़ों व्यक्ति लाटरी का टिकट खरीदते हैं, पर केवल चन्द ही भाग्यशाली व्यक्ति होते हैं, जिनकी लाटरी निकलती है। यहां मैं लाटरी द्वारा धन प्राप्त करने का टोटका दे रहा हूं। इस कार्य में सफलता केवल भाग्य पर ही निर्भर करती है।

जिस दिन लाटरी का टिकट खरीदना हो उस दिन आप प्रातःकाल ही स्नान करें। लक्ष्मी के चित्र के आगे धूप दीप जलाएं। पीले पुष्प अर्पण करें और पीली वस्तु खाकर, पीत वस्त्र पहनकर लाटरी का टिकट खरीदकर लाएं। यह ध्यान रखें उस टिकट

अंकों का जोड़ आपके मूलांक के जोड़ से मिलता हुआ हो। वह टिकट लाकर लक्ष्मी के चित्र के आगे रख दें। मां लक्ष्मी की कृपा से हो सकता है आपको कोई पुरस्कार मिल जाये ?

मूलांक आप अपनी जन्म तिथि से ज्ञात कर सकते हैं। ध्यान रहे जन्म तिथि शुद्ध होनी चाहिए, वरना गणित में त्रुटि होने पर आप लाभ से वंचित भी हो सकते हैं।

• सफलता प्राप्ति के लिए

प्रातः सोकर उठने के बाद नियमित अपनी हथे-लियों को ध्यानपूर्वक देखना और उन्हें तीन बार चूमना सफलता प्राप्त करने के लिए, अचूक और सफल टोटका है। इस टोटके को किसी भी शनिवार से शुरू कर सकते हैं। इस टोटके को गुप्त रखें, अन्यथा मनवांछित फल मिलने में कठिनाई होती है।

• धन सम्पत्ति हेतु

काली बिल्ली की जेर को तिजोरी, व्यापार स्थल या जेब में रखने से जीवन धनधान्य से पूर्ण होता है। यह प्रयोग मैंने स्वयं समय-समय पर आजमाया है और शत प्रतिशत ठीक पाया है।

• सफलता हेतु

अखण्डित भोज पत्र पर लाल चन्दन से मोर के पंख की कलम से १५ का यंत्र लिखें और उसे अपने पास रखें। सदैव सफलता प्राप्त होगी।

मंत्र इस प्रकार है—

15.

६	१	८
७	५	३
२	९	४

• प्रतिद्वन्द्वी को भगाने के लिए

तन्त्र में इस प्रकार के प्रयोग निषिद्ध हैं, फिर भी मैं पाठकों की सुविधा के लिए दुश्मन को भगाने का प्रयोग दे रहा हूं। यह प्रयोग भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये प्रयोग में लाया जा सकता है।

किसी भी रविवार को 'गुज्जा' लाकर रख लें। जब भी कोई कुँवारी कन्या रजस्वला हो उसके रक्त में इस 'गुजा कल्प' को भिगो लें। इसके बाद छांह में

सुखा लें। इसको पीस कर इसका चूरन कर लें। इस चूर्ण को दुश्मन के घर, दुकान के मुख्य द्वार पर छिड़क दें। कुछ समय के बाद वह स्वयं ही भाग जाएगा।

सरल टोटके एवं रोग निवारण

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का जितना महत्व है, उतना किसी और बात का नहीं। स्वास्थ्य का ही दूसरा नाम जीवन है। अंग्रेजी में कहावत है (HEALTH IS WEALTH) स्वास्थ्य ही धन है। हमारे यहाँ भी कहा गया है—पहला सुख निरोगी काया। स्वास्थ्य ही सब कुछ है।

स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ आत्मा निवास करती है। यह विद्वानों का मत है। मैं स्वास्थ्य से सम्बन्धित कुछ टोटके दे रहा हूँ। इनके करते ससय स्वच्छता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। कोई त्रुटि न होने दें। अतएव सतर्कतापूर्वक और ध्यान से इन पर अमल करें।

• ज्वर नाशक

यह एक ऐसा रोग है जो प्रायः होता रहता है। बच्चे बूढ़े सभी इसका शिकार बनते हैं। प्रायः उपचार से आराम हो जाता है, पर यदि शीघ्र लाभ और

काफी समय तक इससे मुक्ति पाना है, तो शनिवार के दिन सूर्यास्त के पश्चात् हनुमान मन्दिर जाएँ। हनुमान को साष्टांग प्रणाम कर उनके केवल चरणों का सिंदूर ले आयें। फिर एक कुश-आसन पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर इस श्लोक को सात बार पढ़ें।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्री रामदूत शरणं प्रपद्ये॥

पाठ के उपरान्त ज्वर रोग से ग्रसित व्यक्ति के माथे पर इस सिंदूर का लेप कर दें। ज्वर प्रकोप शान्त हो जाएगा।

यह रामबाण "मन्त्र" प्राय सभी प्रकार की व्याधियों में अपना रामबाण असर करता है, पर विशेष रूप से इसे हर प्रकार के ज्वर में अत्यन्त उपयोगी पाया जाता है।

२. सफेद मदार की जड़ लाकर उसे कपड़े पर धागे के द्वारा पुरुष की दाहिनी ओर और स्त्री की बांयी ओर बांध दे। इससे एक दिन छोड़कर दूसरे दिन आने वाला ज्वर समाप्त हो जाता है।

३. शनिवार के दिन बबूल की जड़ सफेद धागे में लपेट कर बांह में बांध लें। यह तन्त्र शीत ज्वर

को शान्त करता है। सफेद कनेर की जड़ से भी यही लाभ होता है।

४. सोंठ की माला बनाकर जाप करने से सामान्य ज्वर शान्त हो जाता है।

• नजर बाधा दूर करने का टोटका

मनुष्य की नजर में बड़ी शक्ति होती है। कुछ नजरों में तो बड़ा भयानक प्रभाव होता है। जब कोई किसी को बुरी नजर या बदनीयती से देखता है तो उसका प्रभाव होता है। बालकों को नजर लगने से अपच, ज्वरादि हो जाता है।

नजर उतारने के अनेक सफल उपाय हैं अधिकांश प्रमाणिक है। जब भी नजर को शंका हो इनका उपयोग करें।

१. राई, लहसुन, नमक, प्याज के छिलके सूखी लाल मिर्च को साथ-साथ रखकर अंगारों पर छोड़ दो फिर इन अंगारों को नजर लगे व्यक्ति या वस्तु पर सात फेरे लगाकर घर के बाहर फेंक दे। बुझाएँ नहीं।

२. शनिवार या रविवार को नजर लगे व्यक्ति के सिर पर से सात बार दूध के फेरे लगायें बाद में यह दूध काले कुत्ते को पिला दें।

३. नजर लगे व्यक्ति या बालक को दरवाजे (देहरी) के बींच में बैठा दें। थोड़ा काला उड़द, नमक और मिट्टी बराबर-बराबर मात्रा में लेकर सात फेरे लगाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

४. नजर लगे व्यक्ति से नजर लगाने वाले व्यक्ति (संभावित) का नाम लेकर झाडू या जूला हाथ में लेकर २१ बार उतारें और फिर उसे जमीन पर जोर-जोर से २१ बार पटकें।

५. थोड़ी सी फिटकरी ले लें। नजर लगे व्यक्ति पर से २१ बार उतारें फिर उसे चोराहे पर ले जाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

मोटापा घटाने के लिए

बहुत से लोग अनावश्यक रूप से मोटे और भद्दे हो जाते हैं। उनको इससे परेशानी होती है। ज्यादा मोटा होना भी ठीक नहीं है। जो अपना मुटापा कम करना चाहते हैं वह रविवार के दिन काला धागा अनामिका में बांध लें और उसे रांगे की अंगूठी से ढक दें। धीरे-धीरे मुटापा स्वयं कम हो जाएगा।

• भूख न लगने पर

बहुत से व्यक्तियों की यदाकदा भूख ही कम हो

जाती है। कुछ भी खाने के लिए मन नहीं होता। शरीर आलस्य और टूटन से भर जाता है। चेहरा निस्तेज होने लगता है। इस प्रकार के रोग से पीड़ित व्यक्ति को रोज कम से कम एक घण्टा पेट के बल सोना चाहिए।

प्रातःकाल सोकर उठने पर एक गिलास शुद्ध जल को हाथ में लेकर जल की ओर देखें और "ओम अमिचक्रायहीय नम" का १०८ बार पाठ करें। पाठ करते समय केवल हाथ में लिए जल की ओर देखते रहें। जाप पूरा होते ही सारा जल एकदम पी जाएं और गिलास को औंधा करके रख दें मेरा यह अनुभूत प्रयोग है भूख लगने लगेगी।

• आलस्य दूर करने हेतु

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। प्रायः इस बीमारी के कारण व्यक्ति का काम-काज में मन नहीं लगता, बात करते-करते सुस्ती आ जाती है बदन टूटने लगता है।

ऐसे व्यक्ति सुबह स्नान करते समय रेशम का एक धागा हाथ में लेकर सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाएँ और १०८ बार "ॐनमो भगवते सूर्याय

स्वाहा" का जाप करें। फिर धागा बायें हाथ के अंगूठे पर बांध दें।

अगर धागा न बांधना चाहें तो प्रतिदिन नियम से एक टांग पर खड़े होकर इस मन्त्र का जाप करें। वांछित लाभ होगा।

• अतिसार का टोटका

अधिक दस्त लगने पर सहदेई के पौधे की जड़ के सात बराबर-बराबर टुकड़े करें। इसकी एक माला कमर में बांधें। अतिसार समाप्त हो जाएगा।

• वायु-गोला

कुछ लोगों के शरीर में वायु का गोला घूमता है। इससे बड़ी तकलीफ और बेचैनी होती है।

रविवार या मंगलवार के दिन काठ की नाव की कील और काले घोड़े की नाल का एक छल्ला बनवा लें। यह कड़ा हाथ में पहनने से वायु गोले का वेग शान्त हो जाएगा।

अगर इसकी अंगूठी बनवाकर बीच की अंगुली में शनिवार के दिन पहने तो शनि का प्रकोप भी शान्त होता है।

• पेट दर्द में

उत्तर की तरफ मुँह करके कुशा के आसन पर बैठ जाएँ। थोड़ा-सा कपूर हथेली पर रख लें। १०८ बार "ॐ नमः शिवाय" का जाप उस कपूर को देख-कर करें। फिर स्वयं या किसी अन्य को पेट दर्द हो तो उसे खिला दें दर्द जाता रहेगा।

कपूर न मिलने पर एक कटोरी में जल भरकर कटोरी हाथ में रख लें बाद में उपरोक्त मन्त्र पढ़कर वह जल रोगी को एक सांस में पी जाने के लिए कहें। दर्द ठीक हो जागगा।

• आंत का उतरना

आंत के लिए शनिवार के दिन लाजवन्ती पौधे की जड़ लाकर छल्ले के रूप में कमर से बांधें तो आंत का उतरना बन्द हो जाएगा।

भिंडी की जड़ भी इसी तरह प्रयोग करें। तुरन्त लाभ होगा।

• खांसी

शुक्रवार या मंगलवार को लोवान के पौधे की जड़ लाकर गले में बांध दें। खाँसी से आराम मिल जाएगा।

• सिर दर्द

सिर दर्द बहुत अधिक होने पर मजीठ के पौधे की जड़ कपड़े में बांध लें। फिर उसे माथे पर रख लें। जब सर दर्द समाप्त हो जाए तो यह जड़ चौराहे पर दक्षिण की ओर फेंक दें।

सिर दर्द दूर होने के बाद एक गिलास ठंडा पानी पी लें। सिर दर्द काफी समय के लिए टल जाएगा।

पथरी

इस बीमारी से आराम पाने के लिए शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल लाकर इसका छल्ला बनवा लें इस छल्ले को नीचे की उंगली में पहनने से पथरी रोग शांत हो जाता है।

संग्रहणी

गेहुअन साँप की पूरी केंचुली को कपड़े में लपेट-कर पेट से बांध लें यह बीमारी जाती रहेगी।

नींद न आना

आजकल नींद न आने की बीमारी काफी बढ़ गई है। नींद न आने के कारण लोग नींद लाने वाली गोलियों का खुलकर प्रयोग करते हैं। अगर किसी को

इस बीमारी से पीड़ित देखतें हैं तो उसे यह प्रयोग बता दें।

बिस्तर पर लेटने के पश्चात् शरीर एकदम ढीला छोड़ दें और शनैः शनैः १०० तक गिनती गिने उसके बाद सांस रोककर 'ॐ कुम्भ कर्णाय नमः' बोलें और सांस छोड़ दे। इस प्रकार १०८ बार करें। प्रारम्भ में थोड़ी बेचैनी तो अवश्य होगी पर नींद आ जाएगी।

फील पांव

निश्चय ही यह एक भयानक रोग है। आक (मदार) का पौधा उत्तर दिशा की ओर से तोड़कर रविवार के दिन लावें। उसकी जड़ को लाल धागे के सहारे जहाँ यह रोग है बांध दें। जब यह रोग ठीक हो जावे तो उस जड़ को कहीं गहरा गाड़ आएँ।

• दांत पीड़ा होने पर

सैहुड़ की जड़ को दर्द करने वाले दांत के नीचे दबा लें दर्द समाप्त हो जाएगा।

दूसरा अनुभूत प्रयोग जो मेरे पिता श्री जगदशी चन्द्र जी ने बताया है वह लिख देना अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ। इसके लिए पहले तो गायत्री मन्त्र की एक माला कभी भी ग्रहण में जपकर सिद्ध

कर दें। उसके पश्चात् जब भी कोई दांत पीड़ा वाला रोगी आए उससे एक कील ३ इंच की मंगवाले। नीम के पेड़ के पास ले आवे जिस दांत में दर्द है उसे पकड़ कर कील नीम में गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए ठोक दें। दर्द काफी समय के लिए समाप्त हो जाएगा।

• बबासीर

१. भेड़ की खाल की अंगूठी गुरुवार के दिन बनाकर उसी दिन मध्यमा अंगुली में पहनें। लाभ होगा।

२. धतूरे की जड़ कमर में बांधें।

३. सांप की केंचुली बबासीर के मस्सों पर बांधें निश्चित लाभ होगा।

४. लाल रंग का धागा निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित कर पैर के अंगूठे में बांधें। लाभ होगा।

'खुरासां की टहनो सा, अमति अमति चल चल स्वाहा।'

• मिरगी

यह एक असाध्य एवं भयानक रोग है। इसका एक अचूक उपाय मुझे अमरनाथ जी की यात्रा के दौरान एक वृद्ध साधु ने बताया था।

कर लें। उसके पश्चात् जब भी कोई दांत पीड़ा वाला रोगी आए उससे एक कील ३ इंच की मंगवाले। नीम के पेड़ के पास ले आवे जिस दांत में दर्द है उसे पकड़ कर कील नीम में गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए ठोक दें। दर्द काफी समय के लिए समाप्त हो जाएगा।

• बबासीर

१. भेड़ की खाल की अंगूठी गुरुवार के दिन बनाकर उसी दिन मध्यमा अंगुली में पहनें। लाभ होगा।

२. धतूरे की जड़ कमर में बांधें।

३. सांप की केंचुली बबासीर के मस्सों पर बांधें निश्चित लाभ होगा।

४. लाल रंग का धागा निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित कर पैर के अंगूठे में बांधें। लाभ होगा।

'खुरासां की टहनी सा, अमति अमति चल चल स्वाहा।'

• मिरगी

यह एक असाध्य एवं भयानक रोग है। इसका एक अचूक उपाय मुझे अमरनाथ जी की यात्रा के दौरान एक वृद्ध साधु ने बताया था।

१. २१ डलियां (छोटी) नमक की ले लो फिर उसे रेशमी धागे में बांधकर गले में पहन लें। लाभ होगा।

२. शुद्ध हींग १ तोला को पन्द्रह के यंत्र में भर-कर गले में पहनें, लाभ होगा। इसे ढाई घर की चाल से लिखें।

• यंत्र 15

६	१	८	
७	५	३	अमुक
२	९	४	

• पागलपन-उन्माद

प्रत्येक मंगलवार, शनिवार को संध्याकाल हनुमान जी के चरणों का सिंदूर पागल के माथे पर लगाते रहिए। शीघ्र ही शुभ फल सामने आएगा।

औघड़ तंत्र में एक और विधि है। कुत्ते के अगले पैरों में से किसी एक तरफ का नाखून, कौवे का नाखून और बिच्छू तीनों को ऊंट के चमड़े में सिलाकर

तावीज बना लें फिर रोगी के गले में डाल दें। कुछ समय में ठीक हो जायेगा।

• ब्लड प्रेशर

ब्लड प्रेशर के लिए रुद्राक्ष की माला पहनना अति उत्तम है। ध्यान रखें रुद्राक्ष काले धागे में ही पिरोएँ।

प्रातःकाल नियम से २१ बार 'ॐ मंगल ग्रह देवाय नमः' का जाप करें। जब तक इस मंत्र का जाप करें तब तक नमक का सेवन कम-से-कम करें।

• नेत्र दोष

आंखों के सभी प्रकार के विकारों और नजर कमजोर होने पर गोरख मुंडी का पौधा उखाड़ लाएं। फिर घर लाकर जल से धो कर सुखा लें। चार-पांच दिन बाद जब यह सूख जाए तो कूट-पीसकर उसका चूर्ण बना लें।

रात को सोते समय एक चुटकी लोटे में डाल दें। प्रतिदिन प्रातः उठकर उस जल से आँखों को धो लें। इससे सभी प्रकार के आँखों के रोग समाप्त होते हैं।

इसी चूर्ण की एक चुटकी दूध में डाल लें और इस दूध को पीलें। इससे शारीरिक शक्ति का विकास होता है, नेत्रों पर अपूर्व कांति आ जाती है।

लम्बे घने बाल

काले रंग के घोड़े की लीद जला लें । भस्म बन जाने पर उसकी राख धोई तिल्ली के तेल में मिलाकर बालों की मालिश करें और लगातार यह तेल लगाते रहें । इसके नियमित प्रयोग से बाल लम्बे और घने होंगे ।

• गंजापन

बहुत से स्त्री-पुरुषों के सिर के बाल गायब हो जाते हैं । इस प्रकार बालों का झड़ना या टूटना गंजापन कहलाता है ।

ओघड़ तंत्र में इसके लिए एक विचित्र प्रयोग है । इस प्रयोग को सम्भवतः घृणा या गंध के कारण करने में लोग हिचकते हैं । मैंने स्वयं इसका प्रयोग नहीं किया है, पर विधि में बतलाया गया है गधे की सिर की हड्डी को जैतून के तेल में घिस कर लेप बनाएं और गंजा स्थान पर लगाकर रात को सो जाएं । प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके लेप को धोएं

थकावट

यात्रा से उत्पन्न थकावट कार्य से उत्पन्न थकावट को दूर करने के लिए ठंडे पानी से दोनों पैर धो लें ।

लम्बे घने बाल

काले रंग के घोड़े की लीद जला लें। भस्म बन जाने पर उसकी राख धोई तिल्ली के तेल में मिलाकर बालों की मालिश करें और लगातार यह तेल लगाते रहें। इसके नियमित प्रयोग से बाल लम्बे और घने होंगे।

• गंजापन

बहुत से स्त्री-पुरुषों के सिर के बाल गायब हो जाते हैं। इस प्रकार बालों का झड़ना या टूटना गंगापन कहलाता है।

ओघड़ तंत्र में इसके लिए एक विचित्र प्रयोग है। इस प्रयोग को सम्भवतः घृणा या गंध के कारण करने में लोग हिचकते हैं। मैंने स्वयं इसका प्रयोग नहीं किया है, पर विधि में बतलाया गया है गधे की सिर की हड्डी को जैतून के तेल में घिस कर लेप बनाएं और गंजा स्थान पर लगाकर रात को सो जाएं। प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके लेप को धोएं

थकावट

यात्रा से उत्पन्न थकावट कार्य से उत्पन्न थकावट को दूर करने के लिए ठंडे पानी से दोनों पैर धो लें।

तलुओं में हल्के-हल्के निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ फेरे—'ॐ वासुदेवाय नमः' थोड़ी देर में थकावट दूर होकर स्फूर्ति का संचार होगा।

• फोड़े फुन्सी

शरीर में प्रायः फोड़े-फुंसी हो जाया करते हैं। वह पक जाते हैं। मवाद निकलती है। फिर उनका मुंह बन्द हो जाता है। कुछ समय बाद फिर मवाद बन जाती है। इस प्रकार के फोड़े-फुन्सी जब तक न जाएं और मवाद निकल जाए तो फुन्सी के मुंह पर केले के पत्ते पीस कर बांध दें। जब घाव ठीक हो जाए तो यह लुगदी पीले कपड़े में लपेट कर जमीन में गहरे गाड़ दें।

• अधिक मासिक धर्म होने पर

[मंगलवार के दिन लगभग ६ ग्राम धनिया लेकर किसी कलई किये गए पीतल के बर्तन में आधा किलो पानी में डालकर पकाएँ। जब पानी आधा रह जाए तो उतार लें और उसमें २०० ग्राम मिश्री मिला दें। अब इसे बृहस्पतिवार से प्रारम्भ कर रविवार तक थोड़ा-थोड़ा पिलाएं। मासिक धर्म नियमित हो जाएगा।]

पसली, कमर दर्द

जिन व्यक्तियों के पसली या कमर में दर्द रहता हो, वह सायंकाल में डूबते सूरज की ओर मुख करके वहां जहाँ दर्द हो, कमर या छाती पर उस भाग को खोलकर नीम की टहनी को २१ बार स्पर्श करायें और स्वयं निम्न मंत्र बोलता रहे 'ॐ भैरवाय नमः' इसके पश्चात् टहनी को कुंए या तालाब में फेंक दें।

• चक्कर दौरे

बहुत से स्त्री-पुरुषों को अचानक दौरे पड़ते हैं या चक्कर आते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका मुख्य कारण दुर्बलता बतलाया है। प्रायः बीमारी से उत्पन्न दुर्वलता के बाद इस तरह से होता है। इसके लिए तंत्र में यह उपाय बताया गया है—रोगी व्यक्ति सूर्योदय के समय उठे और सूरजमुखी का फूल लेकर अपने माथे पर घिसे। रोगी को चाहिए कि फूल घिसते समय 'ॐ सूर्याय नमः' का जाप करता रहे। इसके पश्चात् वह फूल दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। इसके तुरन्त बाद स्नान कर लें। स्नान के पश्चात् कुछ समय सूर्य की रोशनी में खड़ा रहे। अगर संभव हो तो थोड़ी ताजा क्रीम (मक्खन) पीले। बीमारी से लाभ होगा।

हकलाना

प्रायः देखा गया है कि जो लोग हकलाकर बात करते हैं, वह शीघ्र ही हीनता की भावना के शिकार हो जाते हैं जो व्यक्ति इस दोष से ग्रसित हैं वह निम्न उपाय करें। माँ सरस्वती के आशीर्बाद से वह इस रोग से मुक्ति पा लेंगें।

हकलाने वाला व्यक्ति प्रत्येक सोमवार व शुक्रवार को सूर्योदय से पूर्व उठे। पवित्र होकर वह उत्तर-दिशा की ओर मुख करके बैठ जाए और 'ॐ सरस्वत्यै नमः' का जाप कम से कम १०८ बार करें। जाप से पूर्व एक गिलास में जल सामने रख ले। जाप के बाद उसे पी ले। इसके बाद सायंकाल को २ सुपारियाँ अपने ऊपर से वार कर दक्षिण दिशा में फेंक दे।

• मस्सा

कई बार शरीर के ऐसे स्थान पर विशेष रूप से मुख पर मस्सा निकल आता है जो बहुत ही अप्रिय लगता है। आपरेशन (शल्य क्रिया) से इसको हटाया जा सकता है। तंत्र में इसके कई उपाय बताए गए हैं।

१. काला बैंगन लें। उसे चीर कर दोनों भागों को आपस में रगड़ें, इससे जो झाग उत्पन्न हो वह मस्से वाले भाग पर लगायें। यह बीमारी दूर होगी।

२. रविवार की सायं मारू बैंगन ले लें। रात को मारू बैंगन, काले तिल, साबुत काली उड़द और काला कपड़ा यह सब वस्तुएं सिरहाने रखकर सो जाएं। सोमवार की प्रातः इन्हें किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

३. प्रातःकाल उठकर अपना स्वयं का थूक मस्से पर लगा लें तत्पश्चात् चूना लेकर उस पर लेप कर लें। पान की डंडी से उस मस्से को रगड़ें। मस्सा कट जाएगा। और फिर दुबारा नहीं होगा।

• मुंहासे

यौवन काल में या शरीर की अतिरिक्त गर्मी के कारण प्रायः मुंहासे (कीलें) हो जाया करते हैं। यह पकने पर फूटते हैं। इनका अगर ठीक उपचार न किया जाए तो चेहरे पर काले निशान डालकर व्यक्तित्व का नाश कर देते हैं। तंत्र में कहा गया है कि १२ ग्राम चिरायता ५०० ग्राम पानी में खौला कर जब कुछ गाढ़ा सा बन जाए तो उसमें थोड़ा गंगाजल डाल दें। इस काढ़े को नियमित प्रयोग करें।

कृपया महिलाएं मासिक धर्म के मध्य इसका प्रयोग न करें।

• सफेद दाग

यह बड़ी ही मनहूस व बदनाम बीमारी है। इस बीमारी को कोढ़ भी मानते हैं, पर वास्तव में यह कोढ़ नहीं है। इसका रूप रंग कोढ़ के समान है। इस कारण यह भ्रम फैला है। तंत्र में इसके निम्न उपाय उपाय हैं :—

१. कपास के पत्तों को पीसकर रस निकाल लें। इस रस को प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व सफेद दाग पर लगाए, सूख जाने पर ताजे पानी से धो लें। इस चिकित्सा के मध्य केवल गाय का घी प्रयोग करें।

२. प्रातः सोकर उठते ही विना कुल्ला किए अनटोक अपना थूक दाग पर लगायें। दाग ठीक हो जायेंगे।

कान की पीड़ा

किसी भी प्रकार की कर्ण पीड़ा में प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमस्कार करें। फिर उत्तर की ओर मुख करके प्राणायाम करें। आसन करते समय कानों को अंगुलियों से बन्द कर लें, केवल श्वास छोड़ते समय कानों की अंगुलियाँ हटा लें। प्रत्येक बार जोर से उच्चारण करें 'ॐ वासुदेवाय नमः' इससे कानों के रोग से मुक्ति मिलेगी।

नेत्र पीड़ा

नेत्र पीड़ा के मध्य प्रातःकाल उठकर सूर्य को नमन करें। उसके बाद सूर्यमुखी का फूल सूंघे तथा शुद्ध गुलाब जल आँखों में डालें। इस प्रयोग से नेत्र पीड़ा समाप्त होती है।

• हिस्टीरिया

यह रोग प्रायः स्त्रियों को होता है। मेरा स्वयं का अनुभव है कि यह रोग अविवाहिता एवं संतान-हीन स्त्रियों को अधिक होता है। इसमें रोगी के दांत कस जाते हैं और शरीर ऐंठ जाता है। बड़ी कठिनाई से होश आता है।

इस प्रकार का दौरा पड़ने पर हल्दी या प्याज सुंघाने से लाभ होता है।

हिस्टीरिया का दौरा न पड़े इसके लिए प्रत्येक रविवार को गौ पूजन और चन्द्रमा के दर्शन करने चाहिएँ।

दस्त

यह शरीर की खराबी, पाचन क्रिया की गड़बड़ी से हो जाया करती है। इसके बहुत से अच्छे डाक्टरी उपचार हैं। सर्वप्रथम इसको ही कीजिए। जब यह

देख लें कि किसी प्रकार से कमी नहीं आ रही है। तो निम्न प्रकार उपाय करें—

सर्वप्रथम सफेद कागज पर एक चौकोर आकृति बनाएँ।
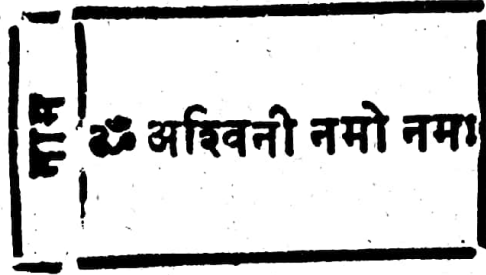
नमक	ॐ अश्विनी नमो नमः

इसके पश्चात् इस चौकोर के चारों कोनों पर सेंधा नमक की छोटी-छोटी लगभग बराबर वजन की डलियां रख दें। मध्य भाग में ७ काली मिर्च रख दें। उन पर 'ॐ अश्विनी नमो नमः' का उच्चारण २१ बार दोहराएँ। इसके पश्चात् इन सब वस्तुओं को उठा लें। इन सबको पीसकर चूर्ण बना लें और दिन में तीन बार खाएं। यह क्रिया केवल मंगलवार और शनिवार को करें।

बदहज्मी

बदहजमी या अफारा होने पर तत्काल तुलसी के ७ पत्ते लेकर उन पर 'राम दूताय हनुमान, पवनपुत्र, हनुमान' कहते हुए २१ बार फूंक मारें और वह पत्ते रोगी को खिला दें। (याद रखें यह पत्ते रोगी चबाए

नहीं) तुरन्त लाभ हो जाएगा। यह मेरा स्वयं का अनुभूत है।

पसली में दर्द

प्रायः देखा गया है कि छाती पसली में तेज दर्द होता है जिसे शल भी कहते हैं। दर्द से आदमी बेचैन हो जाता है। एक आटे की दीपक बनायें और उसके समक्ष 'राम रमेति राम राम राम' का जाप करें। कुछ समय पश्चात् उस दीप को हाथ से बुझा दे (मुंह से फूंक मारकर कदापि न बुझाएँ) दीपक की बाती निकाल लें और छाती पर मलें। शूल रोग ठीक हो हो जाएगा। सम्भव हो तो उक्त मंत्र का जाप निरंतर करते रहें।

दाद, खाज, खुजली होने पर

समस्त चर्म रोगों के उपचार के लिए रुद्राक्ष को अत्यन्त उपयोगी माना गया है। ५, ७, ११, १६ मुखी रुद्राक्ष को गंगा जल में घिस कर निम्न मंत्र के जाप से शुद्ध या अभिमंत्रित कर लें उसके पश्चात् वह लेप लगाएँ। तुरन्त लाभ होगा। मंत्र इस प्रकार है 'ॐ हां आं सम्यो स्वाहा'।

अगर दाद, खाज, खुजली का रूप अत्यन्त घिनौना

हो गया हो तो एक अगरबत्ती शिव की पिंडी के आगे जला दें। इस अगरबत्ती की विभूति को उक्त लेप में मिला लें ध्यान रहे अगरबत्ती केवल शुद्ध चन्दन की हो। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का जाप कर अभिमंत्रित कर लें—ॐ रूं भूं यूं ॐ। भगवान शिव की कृपा से अवश्य ही लाभ होगा। यह क्रिया सोमवार के दिन अधिक प्रभावी होगी।

• सिर दर्द हेतु

[शनिवार या मंगलवार के दिन हनुमान के पैरों से थोड़ा सा सिंदूर ले आए। इसके बाद इस मंत्र से अभिमंत्रित कर सिर दर्द के रोगी के माथे पर तिलक कर दें। शीघ्र लाभ होगा। यह एक शाबर मंत्र है, इसमें विशेष सालधानी बरतने की आवश्यकता नहीं होती है।

हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा।]

• रोगों से मुक्ति हेतु

जीवन में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसे कभी ना कभी कोई ना कोई रोग न हुआ हो। भिन्न-

भिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति पाने के लिए निम्न मं
का प्रयोग करें —

'ॐ नमो परमात्मने पारब्रह्म मम शरीरे
पाहि पाहि कुरू कुरू स्वाहा।

इस मन्त्र को गंगाजल पर १०८ बार पढ़ें और रोगी व्यक्ति को पिला दें। शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के लक्षण प्रतीत होने लगेंगे। शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

कंपकंपी होने पर

प्रायः देखा गया है कि बुखार में, भय से, कंपकंपी प्रारम्भ हो जाती है। कई बार तो अनेक गर्म कपड़ों से ढांकने के वाद भी कंपकंपी बन्द नहीं होती है। ऐसे समय में निम्न मन्त्र का जाप कर एक लवंग खिला दें कंपकंपी बन्द हो जाएगी मन्त्र निम्न प्रकार है—

'ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।

रात के ज्वर के लिए

मेरे स्वयं के अनुभव में ऐसे अनेक रोगी आए हैं जो दिन भर तो ठीक रहते हैं, पर रात आते-आते ज्वर हो जाता है। मध्य रात्रि के पश्चात् ज्वर धीरे-धीरे कम होता हुआ प्रातः तक बिल्कुल ठीक हो जाता

है। इस प्रकार के ज्वर के लिए मकोय को जड़ ले आएं उस पर इक्कीस बार निम्न मंत्र का जाप करें और उस जड़ को रोगी के हाथ पर बांध दें। मन्त्र निम्न प्रकार है—

'ॐ ह्रीं चामुण्डे ज्वल ज्वल स्वाहा।'

वायु विकार हेतु

ॐ वम् वज्रहस्ताभ्याम् नमः।

इस मन्त्र को किसी भी सूर्यग्रहण के अवसर सिद्ध कर लें। इसके पश्चात् पानी या चीनी पर २१ बार पढ़ कर रोगी को दे दें। तुरन्त लाभ होगा। इस मन्त्र में अधिकस्य अधिक फलम् जितना जाप करोगे उतनी ही अधिक शक्ति प्राप्त होगी और रोगी को उतनी ही जल्दी आराम आएगा।

आधा सिर का दर्द

प्रायः देखा जाता है, कि कुछ व्यक्ति अपने सिर के आधे हिस्से में तेज दर्द की शिकायत करते हैं। लाख इलाज करने के बाद भी लाभ नहीं होता। ऐसे रोगियों के लिए हम दो प्रयोग लिख रहे हैं—

१. जिस व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) के सिर में आधाशीशी का दर्द हो वह छोटी-सी गुड़ की डली

ले ले। प्रातःकाल या सायंकाल जब दोनों समय मिल रहे हों तो निम्न मंत्र का जाप करते हुए चौराहे पर जाएं वहां दक्षिण की ओर मुँह करके गुड़ की डली को दांतों के अग्रिम भाग से काटकर दो हिस्से कर ले, तत्पश्चात् उन दोनों हिस्सों को वहीं चौराहे पर एक अपने आगे और एक पीछे फेंक कर चला जाए। दर्द शीघ्र ठीक हो जाएगा। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ छ फटः स्वाहा।

२. सफेद चिरमिटी ले लें। इस चिरमिटी को महीन पीस लें; इसके पश्चात् कपड़छन कर लें। गंगाजल मिलाकर इसकी लुगदी तैयार कर लें। इसके बाद उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर लें। अब आधा शीशी के दर्द के लिए दवा तैयार है। इसे थोड़े-थोड़े समय के बाद सूंघें। लाभ होगा।

हृदय विकार के लिए

१. 'हौल दिली' लेकर उसे काले डोरे में डाल लें। इसे सोमवार के दिन गले में धारण करें।

२. सोमवार के दिन काले डोरे में पांच मुखी रुद्राक्ष का धारण करना भी हृदय रोच के लिए उत्तम रहता है।

३. जिन व्यक्तियों को कई बार दिल का दौरा पड़ चुका हो वह निम्न प्रयोग को करें—

१. पांचमुखो रुद्राक्ष।

२. गक लाल रंग का हकीक।

३. आधा मीटर लाल कपड़ा।

४. लाल मिर्च।

इन सब वस्तुओं को २१ बार ऊपर से उतारकर किसी नदी में प्रवाहित करवा दें।

सूर्य को प्रतिदिन नमन करना और जल अर्पण करना दिल के रोगियों के लिये लाभदायक होता है।

• मधुमेह के लिए

मधुमेह के वह रोगी जो नियमित रूप से इंसुलिन ले रहे हों, या शकर बहुत अधिक जाती हो वह निम्न बटी का प्रयोग करें—

१. शिलाजीत,

२. विजय सार,

३. गिलोय सत,

४. गुड़मार बूटी,

५. चिजक।

यह सब वस्तुएँ सरलता से मिल जाती हैं। आप केवल शुद्धता सुनिश्चित कर लें।

इन सब वस्तुओं को एक ही वजन में ले लें, इसके बाद इन्हें कूटकर एक जान कर लें फिर छान लें इसके बाद लगभग एक-एक माशे की गोलियाँ बना लें। इन गोलियों को प्रातः और सायं गर्म दूध से सेवन करें। यह गोलियों ३१ दिन तक प्रयोग में लानी हैं।

• हर रोग से मुक्ति हेतु

प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति हर बार रोगी होने के पश्चात् निरन्तर बीमार चलता रहता है। एक रोग ठीक होता है तो दूसरा घेर लेता है। रोग मुक्ति हेतु एक मंत्र लिख रहा हूँ। इसे किसी भी साधारण कागज पर लिखकर जल में बहा दें। लिखने की संख्या कम-से-कम २५०० होनी चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है—,

या हफीजन या हफीजन या हफीज।

सम्भव हो तो यह मन्त्र बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को करें, इससे अधिक लाभ होगा।

• भगन्दर

जिन लोगों को यह बीमारी हो वह यह चिकित्सा करें। इसमें केवल नमक और खटाई का परहेज रखें।

यह बीमारी ठीक हो जाएगी यह विश्वास रखें।

१. शुद्ध घी।

२. शक्कर (सफेद)।

३. चोब चीनी।

इन सब वस्तुओं को समभाग मिलाकर लगभग २-२ तोले के लड्डू बना लें और कुएँ के ताजे मीठे पानी से प्रतिदिन नियम से सुबह-शाम सेवन करें। लगभग २१ दिन में यह बीमारी लगभग समाप्त हो जाएगी।

• काम शक्ति के लिए

१. कृष्ण पक्ष के रविवार के दिन एक छेद की हुई कौड़ी लें और उसमें खच्चर व घोड़े की पूंछ के बाल पिरो कर बांह में पहन लें। शीघ्र पतन कभी नहीं होगा।

२. लंगड़ा, सफेदा या मालदा जाति के आम की जड़ का प्रयोग रविवार को करें। पूर्ण रति सुख प्राप्त होगा।

स्वप्न दोष में

काले धतूरे की जड़ का ५-६ ग्राम का टुकड़ा यन्त्र में भर कर कमर में धारण करें। इसके पहनने मात्र से स्वप्न दोष रुक जाएगा।

• दाढ़ दर्द के लिए

दाढ़ में बेतरह दर्द होने पर निम्न मन्त्र से झाड़ देवें, तुरन्त दर्द ठीक हो जाता है, अगर दर्द अधिक तेज हो तो एक कील वृक्ष में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए ठोक दें। मन्त्र निम्न है—

'ॐ नमो आदेश गुरु का
बन में आई अंजनी जिन जाया हनुमंत
बीषा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भसमन्त
गुरु की भक्ति मेरी शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'

• पीलिया झाड़ने का मंत्र

एक काँसे को कटोरो में सरसों का तेल और तिल लेकर रोगी के सिर पर रखें और कुशा के पिच्छक से उसे हिलाते हुए निम्न मन्त्र ग्यारह बार पढ़ें। मन्त्र इस प्रकार है :—

'ॐ नमो वीर बेताल इसराल
नार कहे तू देव खादी तू वादी
पीलिया कूं भिदाती कारें
झाड़े पीलिया रहे न नेक निशान
जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र
ईश्वरी वाचा ।

• रामबाण वशीकरण मंत्र

आप निम्न मन्त्र को किसी भी रबिार से आरम्भ करके शनिवार तक प्रतिदिन ११०१ की संख्या में जप करें। जप करते समय दीपक, लोबान, अगरबत्ती, मिठाई अपने सामने रखें। इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इसके बाद जिसको भी ७ बार पढ़कर वस्तु खिला दोगे वह सदैव वशीभूत रहेगा।

मन्त्र :— बिस्मिल्लाह अर्रहमान नीर

अल्लाह बींच हथेली के मुहम्मद बोच कपार, रहीम।
उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार।
मजे करे मार मार उसे मेरे बाएं कदम तरे डार,
जो न माने मोहब्बत की आन,
उस पर पड़े वज्र का बान,
बहक्क लाइलाह है अल्लाह मोहम्मद मेरा रसूललिल्ल्ह ।

रक्षा मन्त्र

बाल रक्षक मन्त्र

मन्त्र :—

ॐ नमो भगवते गरूड़ाय व्योमकेशाय स्वस्त्यस्तु स्वाहा।

इस मन्त्र को १०१ बार पानी पर पढ़कर बालक के भाल पर तिलक लगावे तो बालक सर्व बाभाओं से सुरक्षिर रहेगा।

अथ सर्वोपरि तन्त्र मन्त्र सिद्धि

मन्त्र :—ॐ परब्रह्मा परमात्मने नमः, जन्मोत्पत्ति-स्थिति-प्रलयकालाय ब्रह्मा-हरि-हरये त्रिगुणात्मने सर्व-भौतिकत्रिदर्श-पदवाचकाय नमः तन्त्रान् सिद्धं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि :—घृत का दीपक जलाकर भगवान की मूर्ति को धूप देवे और चन्दन पुष्प नैवेद्य चढ़ावे फिर उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार सिद्ध करे तो सिद्ध होवे।

• यात्रा कुशल हो

शेख फरीद की कामरी अंधियारी निशा तीन बीज बराय ॐ नमो स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर यात्रा करे यदि मार्ग में पानी बरसे, ओला पड़े आग लगे तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर ताली मारे तो किसी का भय न हो यानी आफत से बचे।

• नाहर और बिच्छू आदि बांधने का मन्त्र

[या खालिस या मुखालिस या खल्लास काम अबैरा सहम को मुश्किल तुमको ख्वाजा तुमको मुईउद्दीन लिए मोर कांटा चोरा नाहर सर्पा बिच्छू अर्मा चोर चाड़ बंधाय सत्य नाम आदेश गुरु को सांचा ईश्वरोवाचा।]

विधि :—नौचन्दी जुमेरात को ११०१ मन्त्र का जाप कर ले घी का दीपक दरिया किनारे रख के लोबान की धूनी दे तो सिद्ध हो जावेगा। परदेश काज आवे और जंगल में रास्ता पड़े इस मन्त्र को सात बार पढ़े भय न हो। ये सत्य है।

चौकी हनुमन्त वीर की

ॐ हनुमान बारह वर्ष का जवान हाथ में लड्डू मुख में लड्डू पवनहु कुमार आओ बाबा हनुमान दोहाई महादेव गौरा पार्वती की शब्द साँचा फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

विधि :—महीने में पहले मंगल को व्रत करके लाल कपड़े पहिन के मूंगे की माला से जपे और धूप दीप हनुमान के घर पवित्र स्थान में बैठकर तेल, सिन्दूर, व गुड़ और गेहूं का चूरमा सवा सेर करके भोग लगावे और उसमें आप भी खावे और जब इस मन्त्र को ११००० जपे तो सिद्ध तो होवे मंगल को करता रहे सर्व सुख देने वाला राम मन्त्र है जो सब सुख देने वाला है।

• रोजी प्राप्त होने का मन्त्र

ॐ काली कंकाली महाकाली भरे समुन्दर पवि ष्याली चार बीर भैरव चौरासी तब तो पूजूँ पान मिठाई अब बोलू काली दुहाई।

विधि :—नित्य स्नान करके इस मन्त्र को ७ दिन ४८ बार पूर्व मुख होकर जपे तो रोजगार में बहुत नफा होवे इस मन्त्र का वर्णन शंकर जी ने अपने मुख से किया है। ऐसा कहा जाता है।